पीर पराई जाने रे.....

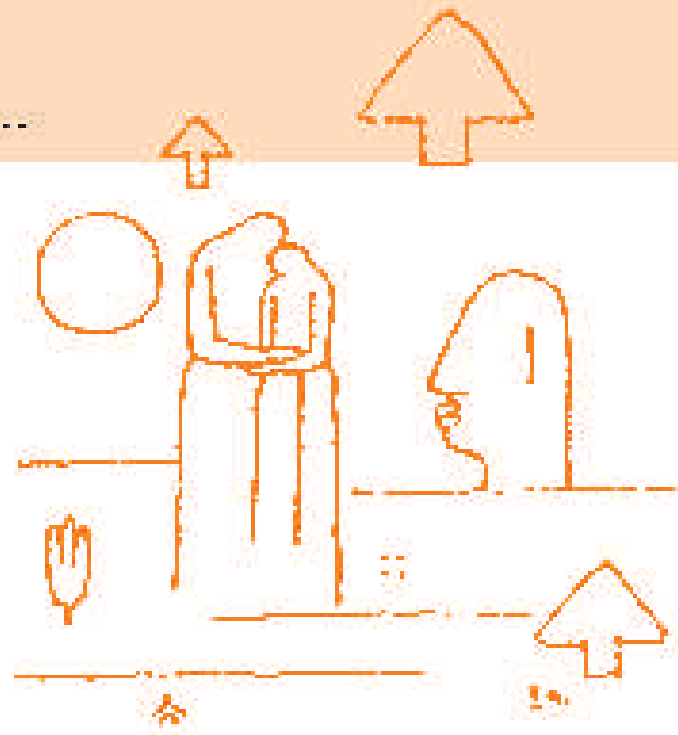

सबसे पहले मैं ये कहना चाहूंगी कि मुनिश्री की अनुपस्थिति स्पष्ट अनुभव की जा सकती है, कोई भी, कभी भी उनकी जगह नहीं ले सकता है।

हम सभी को यह समझना चाहिए कि हर बच्चा "विशेष" है। हम सभी बच्चों में यही देखते हैं कि वो पढ़ाई में कितने अंक ला रहा है। और काफी बच्चे अच्छे अंक लाते भी हैं, लेकिन हमारा ध्यान उन बच्चों पर भी होना चाहिए, जो अच्छे अंक नहीं ला पाते हैं, और जिन्हें फेल होने का, हारने का डर होता है।

हमारे सब तरफ एक Communication Gap फैला हुआ है, ये Communication Gap शिक्षक और विद्यार्थी के बीच में है, माता–पिता और उनके बच्चों के बीच में है, और यही बच्चों में मानसिक तनाव और अवसाद की वजह है। इसका नतीजा हम सभी ने अखबारों में पढ़ा ही है बतौर उदाहरण हाल ही में स्कूल में एक विद्यार्थी ने अपने पिता की रिवॉल्वर से अपने ही एक सहपाठी की जान ले ली।

जीवन एक अवसाद नहीं एक उत्सव है।
जीवन एक खुशहाली की तरह जीने का एक अवसर है,
साथ ही हमें हमारे दायित्व नहीं भूलने चाहिए।

हमें अपने आस–पास की हिंसा, बच्चों में मानसिक तनाव और अवसाद पर सबसे ज्यादा ध्यान देना होगा। मुझे याद आता है जब शिक्षा की नीति निर्धारण में नए कदम उठाए गए तो उनमें Social responsibility of every child पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया गया। इसलिए कई नीति जैसे Each one, teach one या फिर कोई समाज सेवा का कार्य या फिर **NSS** जैसे संस्थान के माध्यम से बच्चों को सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारियां सिखाई जाती हैं।

ऐसा नहीं है कि हिंसा को मिटाने के लिए कदम नहीं उठाए जा रहे हैं, और ऐसा भी नहीं है हम सभी लोग हमारे आसपास होने वाली हिंसक घटनाओं से चिन्तित नहीं है। हिंसा भले ही धर्म के नाम पर हो, जाति के नाम पर हो, क्षेत्र के नाम पर हो या फिर देश के नाम पर हो। ये निर्णय हमें करना ही है कि हम हमारी सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाएं। पहला – हम सब तरफ सेनाओं की घेराबंदी कर दें या फिर दूसरा – हम सभी एक गहन चिन्तन करें कि हमारे आस–पास घटने वाली हिंसा का क्या कारण है? और इसके लिए वो सभी धर्म जो अहिंसा को सबसे सर्वोपरि मानते हैं उनकी जिम्मेदारी हिंसा का मूल कारण जानने के लिए और भी बढ़ जाती है।

किसी भी लड़ाई का निवारण अहिंसा के माध्यम से ही किया जा सकता है। हमें ये विचार करना है कि अहिंसा के माध्यम से बच्चों की छोटी–छोटी लड़ाई या गृह क्लेश जैसी समस्याएं कैसे रोकी जा सकती हैं। हमें हमारे आस–पास एक अहिंसक समाज का निर्माण करना चाहिए। हमें गांधि की संस्कृति का विकास करना चाहिए। हमने आज तक कभी भी इस ओर ध्यान नहीं दिया है। हमने कभी ये नहीं सोचा कि कैसे हम हमारी संस्कृति, हमारे गुणों, हमारी शिक्षा के द्वारा चारों ओर एक अहिंसक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। मैं आप सबसे विनती करती हूँ कि हम सभी आगे बढ़कर ऐसे समाज के निर्माण में योगदान दें, क्योंकि समाज हम सभी से बनती है और इसलिए ये हमारी जिम्मेदारी है कि हम सब इसका निर्माण सही दिशा में करें। "बचपन में माँ कहा करती थीं कि लापरवाही से दौड़ोगे तो तुम्हें भी लगेगी और चींटी भी मरेगी, चींटी मरेगी तो पाप भी लगेगा।" कैसे एक छोटे से उदाहरण से हमने यह सीखा कि छोटे से छोटे जीव की भी रक्षा करनी चाहिए। ये एक बहुत बड़ी बात है कि ऐसे अच्छे विचार, ऐसे गुण हम बचपन से सीखते आ रहे हैं।

एक बार गांधीजी के आश्रम में एक व्यक्ति ने उनसे पूछा, "गांधीजी आप कुर्ता क्यों नहीं पहनते? मैं आपके लिए कुर्ता सिलवाकर ला दूंगा"। इस पर गांधीजी ने कहा, "कितने कुर्ते लाओगे ? " उस व्यक्ति ने जवाब दिया, "जितने भी आप बोलें एक.....दो.....तीन .....?" गांधीजी ने नम्रतापूर्वक बोला, "मुझे 30 करोड़ कुर्ते चाहिए, क्योंकि हमारे देश में आधे लोगों के पास पहनने के लिए कपड़े नहीं है।"

यहां जो बात गांधीजी ने कही वो उनकी सहानुभूति को जाहिर करती है, और हमें इससे यह शिक्षा लेनी चाहिए की हम सभी को एक दूसरे के दुख, एक दूसरे की पीड़ा को समझना चाहिए। ऐसी भावनाएं उचित शिक्षा के माध्यम से उत्पन्न की जा सकती हैं। अगर हमें एक पूरी अहिंसक समाज का निर्माण करना

है, तो हमें एक दूसरे के दुख दर्द को समझना अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षा के चार स्तम्भ है –

- Learning to learn is a pillar of education
- Learning to do
- Learn to live together
- Learn to live together in the same plane

Learn to live together शिक्षा का तीसरा स्तम्भ एक अहिंसक समाज की आधारशिला के लिये महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक साथ रहने की दृष्टि से ही हम एक दूसरे को समझ सकते हैं। शिक्षा का चौथा स्तम्भ अपनाकर हम जाति, क्षेत्र और लड़के–लडकियों के भेद–भाव को दूर कर सकते है **learn to live together in the same plane** ये समझना हमारे लिए बहुत जरूरी है। मैं यहां पर बचपन का एक किस्सा आप सबको बताना चाहती हूँ।

मैं एक बहुत ही साधारण से स्कूल में गई थी, लेकिन मेरे लिए वो स्कूल बहुत ही असाधारण था, क्योंकि पढ़ाई से मैं हमेशा आकर्षित रहती थी। हम सबने दस दिन एक जंगल में टेंट में रहकर व्यतीत किए, लेकिन मैंने कभी भी किसी से ये नहीं पूछा की तुम्हारी जाति क्या है, जबकि मैं एक जैन हूँ। साथ रहने की भावना जाति और धर्म की सभी बाधाओं को पीछे छोड़ देती है।

गांधीजी के एक भजन की कुछ पंक्तियां हैं "वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे" इन पंक्तियों का भावार्थ है कि हमें एक दूसरे के दुख–सुख को समझना चाहिए। गांधीजी ने कहा है कि यदि तुम भगवान का सम्मान करते हो, अपने धर्म का सम्मान करते हो, लेकिन अपने दूसरें लोगों का सम्मान नहीं करते हो तो अपने धर्म का अपने भगवान का भी सम्मान नहीं कर सकते हो। एक अहिंसक समाज के लिए ये बहुत जरूरी है कि हम सब न सिर्फ अपने धर्म का बल्कि सभी लोगों का भी सम्मान करें। ये भावना हमें हमारे शिक्षा तंत्र में थोड़ा बदलाव करने से ही आ सकती है।

हम पर साथ ही हमें ये ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा अहम हम पर कभी हावी न हो। यदि हम कहीं पर 5,000/– का दान करते हैं, तो उसे हमे कहीं भी व्यक्त नहीं करना चाहिए और न ही कभी खुद को याद दिलाना चाहिए। ये बहुत जरूरी है। अहंकार चाहे शिक्षा का हो, या पद का, यदि हम अपने अहंकार को कम करते हैं तो अहिंसक समाज के निर्माण में अपना सहयोग करते हैं।

अंत में मैं दुष्यन्त कुमार की ये लाईनें कहना चाहूंगी –

आग मेरे सीने में न सही,
आग तेरे सीने में सही, लेकिन आग जलनी चाहिए,
मेरा मकसद हंगामा खड़ा करना नहीं है,
मेरी कोशिश है सूरत बदलनी चाहिए।

– डॉ. प्रतिभा जैन, जयपुर

(Young Jaina Award 2008 पर दी गई Speech के अंश)

NEWS IN BRIEF

We are updating our address book and mailing lists. If you have not updated your address by filling up the form send with the previous issue of Chirping Sparrow, we request you to kindly fill up that form and sent us back by not later than 15 days of receiving this issue. Otherwise you can drop us a letter showing your willingness to receive the future issues of Chirping Sparrow and update your correspondence address. You can also drop an email about the same.

इस अंक से हम एक नया कॉलम शुरू कर रहे हैं –

Open Forum

एक परिचर्चा – आपके मनचाहे विषय पर

आपके चयनित विषय पर हम सभी के विचार पत्र या ई–मेल से आमंत्रित करेंगे। फिर चयनित विचारों का संकलन कर उस पर मुनिश्री के चिंतन का समावेश कर आलेख के रूप में आगामी अंक में प्रकाशित करेंगे। आप अपने विषय और विचारों को हमें पत्र या ई–मेल द्वारा लिख भेजें।

'Young achiever' is a regular and widely followed section of Chirping Sparrow. In this section we showcase the achievements of young Jain students and professionals (preferably of Young Jaina Awardees) We request all our awardees / their family members and our readers to please send us your or your wards' or others' achievements which can possibly make it to young achievers . Please send the entry with passport size photograph along with the brief note on achievements and profile.

IIT, PMT, AIEEE, की तैयारी करने वालें विद्यार्थियों यदि कोचिंग के नोट्स की आवश्यकता हो तो हमसे सम्पर्क करें। सम्पर्क : 9425137669, 9827440301

To keep better in touch with the awardees and our readers we use the yjaalumni@googlegroup.com as an umbrella mailing list for Young Jaina awardees, Maitree Samooh members and Friends of Maitree Samooh. We request all our readers to join the mailing list. You can join the mailing list by dropping a mail to samooh.maitree@gmail.com or maitreesamooh@hotmail.com.

Young Jaina Award 2009 का फार्म हमारी बेवसाइट www.maitreesamooh.com से 1 मई 2009 के पश्चात् डाउनलोड कर सकते हैं।

संस्मरण

असीम वात्सल्य

सारा संघ मुक्तागिरि की ओर जा रहा था। सुबह का समय था सभी ने सोचा की समीपस्थ मोर्सी ग्राम तक विहार होगा, सो आसानी से चलकर नौ–दस बजे तक पहुंच जाएंगे। जब दस बजे हम मोर्सी गॉव पहुंचे तो मालूम पड़ा आचार्य महाराज लगभग आधा घंटे पहले यहां से आगे निकल गए हैं। सचमुच, आचार्य महाराज अतिथि हैं, कब/कहां पहुंचेंगे, कहा नहीं जा सकता। उनका यह अनियत विहार कठिन भले ही है, लेकिन बड़ा स्वाश्रित है। विहार की बात पहले से कह देने में दो मुश्किलें खड़ी हो जाती है। यदि किसी कारण निर्धारित समय पर विहार नहीं कर पाए तो झूठ का दोष लगा और जब तक विहार नहीं किया तब तक विहार का विकल्प बना रहा। इससे अच्छा यही है कि क्षण भर में निर्णय लिया और हवा की तरह निःसंग होकर निकल पड़े। आगे क्या होगा इसकी, जरा भी चिन्ता नहीं है यही तो निर्व्दन्द साधना है।

हम सभी आचार्य महाराज का अनुकरण करते हुए आगे बढ़ने लगे। गंतव्य दूर था। सामायिक से पहले पहुंचना सम्भव नहीं था, सो रास्ते में ही एक संतरे के बगीचे में सामायिक के लिए ठहर गए। सामायिक करके हम लोग लगभग ढाई तीन बजे अपने गंतव्य पर पहुंचे। आचार्य महाराज के चरणों में प्रणाम किया वे हमारी स्थिति से अवगत थे, सो अत्यन्त स्नेह से बोले–"थक गए होगे, थोड़ा विश्राम कर लो, अभी आहार–चर्या के लिए सभी एक साथ उठेंगे।"

हम समझ गए की आचार्य महाराज स्वयं समय से आ जाने पर भी चर्या के लिए हम सबके लिए रूके रहे, उनके इस असीम वात्सल्य का हम पर गहरा प्रभाव हुआ, जो आज भी है।

मुक्तागिरि 1980

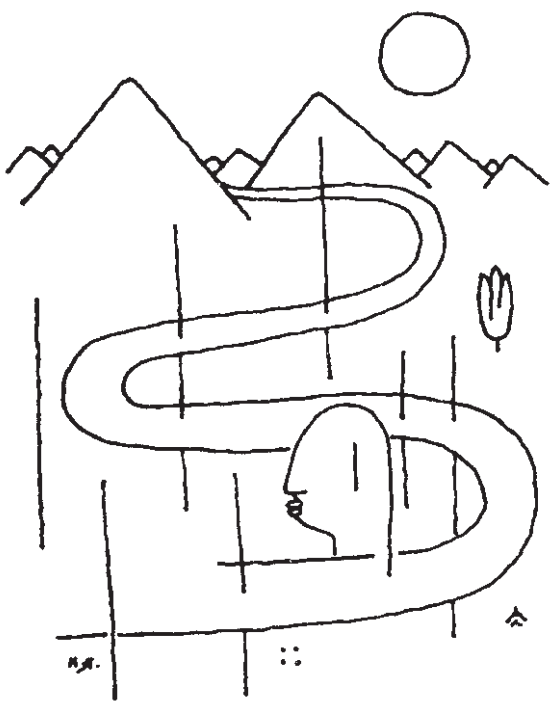

वही है

उसने
एक पेड़ लिखा
खिड़की से बाहर
झॉका, देखा
कोई और
उससे भी पहले
कई–कई पेड लिख गया।

उसने सोचा
वह अब पहाड लिखेगा
देखा सहसा
कोई और सामने
एक पहाड़ लिख गया।

उसने डरते–डरते, चुपके–से
एक नदी को लिखा
और देखा
एक नदी कोई और लिख गया।

अब वह नहीं लिखता
कहता है
कोई और है
और सिर्फ वही है
जो लिखता है

–मुनि क्षमासागर

Someone else

He wrote tree–
and then he looked out the window
someone else had written
many many trees before him.

So he decided he would write, hill--
he looked around and noticed
that someone else had written, hill

Then stealthily he wrote, river--
he noticed that someone else
had written river too.

he does not write anymore
now he says that there is someone else
and that someone else alone, writes.

- Translated by Sunita Jain

मुक्ति से साभार

Cracked pot

A water bearer in India had two large pots, each hung on each end of a pole which he carried across his neck. One of the pots had a crack in it, and while the other pot was perfect and always delivered a full portion of water at the end of the long walk from the stream to the master's house, the cracked pot arrived only half full.

For a full 2 years this went on daily, with the bearer delivering only one and a half pots full of water in his master's house. Of course, the perfect pot was proud of its accomplishments, perfect to the end for which it was made. But the poor cracked pot was ashamed of its own imperfection, and miserable that it was able to accomplish only half of what it had been made to do.

After 2 years of what it perceived to be a bitter failure, it spoke to the water bearer one day by the stream. "I am ashamed of myself, and I want to apologize to you."

"Why?" asked the bearer. "What are you ashamed of?"

"I have been able, for these past two years, to deliver only half my load because this crack in my side causes water to leak out all the way back to your master's house. Because of my flaws, you have to do all of this work, and you don't get full value from your efforts," the pot said.

The water bearer felt sorry for the old cracked pot, and in his compassion he said, "As we return to the master's house, I want you to notice the beautiful flowers along the path."

Indeed as they went up the hill, the old cracked pot took notice of the sun warming the beautiful wild flowers on the side of the path and this cheered some. But at the end of tile trail, it still felt bad because it had leaked out half its load, and so again it apologized to the bearer for its failure.

The bearer said to the pot, "Did you notice that there were flowers only on YOUR side of your path, but not on the other pot's side? That's because I have always known about your flaw, and I took advantage of it. I planted flower seeds on your side of the path, and every day while we walk back from the stream, you've watered them. For 2 years I have been able to pick these beautiful flowers to decorate my master's table. Without you being just the way you are, he would not have this beauty to grace his house."

Moral: Each of us has our own unique flaws. We're all cracked pots. Some of us don't grow old gracefully, some are not so smart, some are tall, large & big, some bald, some physically challenged, but it's the cracks and flaws we each have that make our lives together so very interesting and rewarding. You've just got to take each person for what they are, and look for the good in them. There is a lot of good out there. There is a lot of good in you, My Friend! Blessed are the flexible for they shall not be bent out of shape.

Remember to appreciate all the different people in your life!

आपके पत्र

I am thankful to Maitree Samooh for the newsletter Chirping Sparrow. I eagerly wait for it. I like the column "Mahatvapurna chitthi" very much. The story always teaches a long lasting lesson and moral.

Arpita Jain, Bhopal

मुझे आपके द्वारा भेजी गई **Chirping Sparrow** पत्रिका प्राप्त हुई। इसे पढ़ कर के मन को बहुत शांति मिलती है, क्योंकि मेरी जितनी भी जिज्ञासाएं रहती हैं वे सभी इस **Chirping Sparrow** पत्रिका को पढ़ने से दूर हो जाती हैं। मेरा आप सभी से यही अनुरोध है कि आप इसी तरह से यह पत्रिका भेजते रहें जिससे कि हमें भी कुछ धर्म लाभ प्राप्त हो।

शिल्पी जैन, मेरठ

I like the Chirping Sparrow and specially its charming, suitable and simplified content for us youth. Actually I was disappointed after the cancellation of YJA ceremony 2007-2008. But even today Chirping Sparrow reminds me of beautiful YJA.
Chirping Sparrow helps us to realize our great principles. We need time to time motivation and Chirping Sparrow does that. Article about the five things by Dr.APJ Kalam gave me my confidence back.
I think that there should be some camp or project for us to develop our personality.

Nidhi Shirish Chawra, Karanja

मुझे पत्रिका मिली। मुनिश्री द्वारा दिये गये प्रश्नों के सटीक उत्तर हम युवाओं के लिये अत्यंत प्रेरक, रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। Chirping Sparrow मैं अपने सभी दोस्तों को पढ़ाती हूँ मुझे नियमित यह पत्रिका भेजें । आपके द्वारा समय –समय पर competetive Exams के लिये तैयारी हेतु सहयोग देना सराहनीय है।

अनुभा जैन, देवरी

हमें आपके द्वारा भेजी गई पत्रिका प्राप्त हुई एवं हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ, इसमें आने वाली हर जानकारी ज्ञानवर्धक है। **Truth about tradition** हर बार विशेष जानकारी को संजोए रहता है। प्रेरकप्रसंग **Rich & poor** और **Together we will win** बहुत ही अच्छे लगे। मैत्री समूह के हम आभारी हैं जो इतनी अच्छी पत्रिका शुरू की गई है। एक निवेदन है कि **Career counseling** स्तंभ पुनः शुरू किया जाए ये हम छात्रों को विशेष लाभदायक है इस संबंध में हमारी कई जिज्ञासाएँ हैं ।

सीमा जैन, शिवपुरी

आपके द्वारा भेजी Chirping Sparrow प्राप्त हुई । हमें यह पत्रिका मुनिश्री के आशीर्वाद के समान लगती है । मुझे वर्ष 2005 में Young Jaina Award मिला था और मुनिश्री का आशीर्वाद भी । अपनी इसी भावना को बरकरार रखते हुए यह प्रबल इच्छा है कि मैं एक बार पुनः इस कार्यक्रम में शामिल होऊँ। पत्रिका मुझे निरन्तर भेजते रहिये ।

अंकित जैन, जबलपुर

मैं मैत्री परिवार की Chirping Sparrow को विगत एक वर्ष से प्राप्त कर रही हूँ। यह तीन महीने बाद पत्रिका भेजने की योजना मुझे बहुत पसंद है। क्योंकि जब तक हम अपने परिवार से जुड़े होने को भूलने वाले होते हैं तब यह पत्रिका हमें परिवार से जुड़े रहने का एहसास करा देती है। कृपया आप हमेशा पत्रिका हमें भेजते रहिये ताकि महाराज जी का आशीर्वाद हम तक भी पहुँच सके ।

श्वेता सिंघई, सागर

मैत्री समूह द्वारा भेजी गई पत्रिका मुझे इसी इसी वर्ष प्राप्त हुई । इसे पढ़कर मुझे जो जानकारी मिली वह अकथनीय है। इस पत्रिका के द्वारा मेरे कुछ अनसुलझे प्रश्नों का भी समाधान हुआ है । पत्रिका की हर छोटी बड़ी बात भी अमूल्य और ज्ञानवर्धक है। ये पत्रिका एक माध्यम है , एक स्टेज है , सभी के विचारों को दुनिया के सामने लाने का, दुनिया को जानकारी देने का । इसे हर Book Store पर होना चाहिये ताकि और लोग भी इसे पढ़ सकें । कृपया पत्रिका लगातार भेजते रहियेगा ।

सिल्की जैन, गुना

Open Forum

I read this on the wall of a certain ashram, 'Expensive marriages lead to corruption and greed in the society.' I don't know who said or wrote this but the statement stuck in my mind. Aren't many of rituals in our marriages are meant just to show our status in the Samaj ? The menu of the reception, the places where guests are made to stay, the lawns , the gifts, the outfits, the visits to parlors (even men do this extensively these days) and dowry (still widely prevalent) generally all these involve a huge spending and display of one's financial capabilities.
Picture becomes more gloomy if we consider those who can't be as extravagant and yet have to involve in demonstration of wealth. Maintaining a social status by extravagant spending in marriages results in increased burden amongst families, ultimately creating ground for greed. Now, just put this into a larger perspective. Isn't this a breeding ground for greed and corruption in society? We invite your views , your take and suggestions to get out of this mess.

Aviral Jain, Nagpur

इस समस्या पर आपके क्या विचार या सुझाव हैं । हमें लिख भेजिये या मेल कीजिये –
maitreesamooh@hotmail.com / samoohmaitree@gmail.com

Your space

हे मुनिवर ये मन पूछता है बार-बार
जाने किस मिट्टी से बने हो तुम
जाने कौन से रंग में रंगे हो तुम
सूरज की तपन तपा न सकी जिसे
जाड़े की ठिठुरन डिगा न सकी जिसे
हे सहनशील, संवेदनशील गुरूवर,
हमें भी इस रंग में रंग दो
अमरता का वर दो !

महिमा जैन
शाहपुर

When I was a child,
I used to climb up the pole,
To see the world,
And the whole.
Today when I am grown-up,
And can see the world
Sitting inside my room,
I have forgotten to climb up.
Now,
Will I ever learn again to climb,
And conquer those heights,
Or will I just sit in my room
And miss those sights!

Saurabh Jain, Ashoknagar

लक्ष्य

होश है, जोश है,
लक्ष्य के प्रति दृढ संकल्पित हैं।
क्या हुआ, यदि समय अल्प है।
क्या हुआ यदि मुश्किल भरी डगर है।
क्या हुआ यदि नाकामी का डर है।
अब तो हर हाल में मंजिल को पाना है
गैर हुआ जमाना अब बस
मंजिल ही ठिकाना है।
अब तो हर हाल में
बस मंजिल पाना है।

अनुभा जैन, देवरी

महत्वपूर्ण चिट्ठी

मेरे अच्छे पापा

एक बच्चा अपने पिता से बड़ा प्रेम करता था। पिता भी बच्चे से उतना ही स्नेह रखते थे। बच्चे की माँ नहीं थी, पिता ही उसके लिए माँ और बाप दोनों थे। बच्चा उनके साथ ही खेलता, उनके साथ ही सोता। पिता उसका पूरा ख्याल रखते थे, लेकिन कई बार जाने–अनजाने, चाहे–अनचाहे बच्चे की अनदेखी हो ही जाती थी । हालांकि उसने कभी इस बात को लेकर शिकायत नहीं की थी।

एक बार बच्चे का जन्मदिन आया । वह हर जन्मदिन पर पिता के साथ घूमने –फिरने जाता था । इस बार भी उसे उम्मीद थी कि वे उसे बाहर ले जाएंगे, खिलौने और कपड़े दिलवांएगे। मगर पिता ने ये सारे उपहार उसे एक दिन पहले ही दे दिए। कारणः अगले दिन उन्हें एक बिजनेस मीटिंग में व्यस्त रहना था। ऐसा वे दोनो नहीं चाहते थे, पर कामकाज की मजबूरी थी। बच्चा छोटा ही था, पर पिता की व्यस्तताओं को समझता था। उसे मालूम था कि पापा को घर के अलावा बाहर के कामों का भी ध्यान रखना पड़ता है।

अगले दिन पिता ने जाते–जाते वादा किया कि वे शाम तक जरूर लौट आएंगे और फिर वे दोनों बाहर चलेंगे । बच्चा दिन भर उनकी राह तकता रहा। शाम हो गई । मगर वे नहीं आए । वे भी क्या करते, मीटिंग जरा लंबी खिंच रही थी । कुछ देर बाद रात घिर आई । बच्चा उदास था, पर नाराज नहीं था, क्योंकि वह पिता की दिक्कतों को जानता था । रेफ्रिजरेटर में खाना रखा ही था । पिता ने उसे सिखा रखा था कि कभी उन्हें आने में देर हो जाए, तो वह खाना खा ले और सोने चला जाए।

आया ने नन्हें, मगर समझदार बालक को खाना खिलाया और अपने घर चली गई। बच्चा भी सोने चला गया । पिता ने उसमें एक और अच्छी आदत डाली थी सोने से पहले प्रार्थना करना। बालक बिस्तर पर घुटने के बल बैठ गया। उसने आंखे बंद की और अपने हाथ जोड़े । उधर पिता घर के दरवाजे पर पहुँच चुके थे। उन्होंने जूते उतारे और दबे पाँव शयनकक्ष की ओर बढ़ने लगे, ताकि बच्चे की नींद में खलल न हो।

तभी उसकी आवाज सुनकर वे ठिठक गए। वह कह रहा था, हे भगवान, मेरे पापा बहुत अच्छे है। मैं चाहता हूँ कि बड़ा होकर मैं पापा जितना अच्छा आदमी बनूं । '' बच्चा तो प्रार्थना करके सो गया, पर पिता की आंखो से आंसू बहते रहे । खाना खाकर वे कमरे में पहुंचे तब तक बच्चा गहरी नींद में जा चुका था। बिस्तर पर जाने से पहले पिता ने आसमान की ओर सिर उठाकर हाथ जोड़ते हुए कहा, ' हे भगवान, मेरा बेटा मुझे जितना अच्छा मानता है, तू मुझे उतना अच्छा बना देना।